ममता कालिया की कहानियों में नारी का अस्तित्व

अनिता कुमारी
शोधार्थी, हिन्दी विभाग,
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सारांश - समाज में नारी की एक इकाई के रूप में अपने होने का एहसास से ही अस्तित्व की पहचान होती है स्त्री की अपने अस्तित्व की पहचान तभी हो सकती है जब उनमें शिक्षा का प्रचार-प्रसार हो। समाज सुधारकों का कहना है कि सर्वप्रथम स्त्री जाति को सुशिक्षित बनाओ फिर वह स्वयं रहेगी कि उन्हें किन सुधारो की आवश्यकता है। आधुनिक काल में नारी के सामाजिक और मानसिक चेतना जागृत हुई है। तभी तो वर्तमान दशा में नारियों की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। आज महिलाएं हर क्षेत्र में कार्यरत हैं- कोई शिक्षक है तो कोई वकील, पुलिसकर्मी, डॉक्टर, राजनेता, साहित्यकार, आलोचक, पत्रकार के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन कर रही है। नारी को अपने अस्तित्व बोध होने के कारण घर की चहारदीवारी में से निकलकर अपने कोई किस्म की सूक्ष्म भूमिका निभा रही है। अस्तित्व के इसी संघर्ष के कारण ममता जी की कहानियों के अधिकांश नायिकाएँ एक योग्य अधिकारी, डॉक्टर, अध्यापिका, समाजसेविका एवं साहित्यकार भी है। स्त्री अपने अस्तित्व और अस्मिता पर स्वयं विचार करने के लिए आगे है। जब स्त्री को लगा की उसका अस्तित्व, अधिकार, स्थान और आजादी संकट में है। उसे अपने विचारों की अभिव्यक्ति देनी पड़ी, समाज उसे सेंसर की निगाहों से ना देखे उसे मन से जीने सोचने, लिखने, बोलने की आजादी दे। उसका आचरण कुंठित ना करें। यही स्त्री की स्वाधीनता है। आज के दशक में स्त्री की स्थिति बदली है, उसे पहले से बेहतर आजादी मिली। ममता कालिया की कहानियों में अधिकांश स्त्री चरित्र मध्यम वर्गीय शिक्षित स्वावलंबी और स्वतंत्र है जो अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही होती है।

बीज शब्द – नारी, अस्तित्व, अस्मिता, समाज, परिवार, शिक्षा।

मूल आलेख - ममता कालिया की कहानियों में नारी बदलते हुए जीवन मूल्यों में पुरुषों के समान अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता एवं पहचान को सुरक्षित रखने के लिए प्रयत्नशील है। वह रूढ़ियों व परंपराओं के विरुद्ध अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान के लिए तथा अपने अधिकारों को प्राप्त कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए संघर्षरत है। ममता जी की कहानियों में नारी पितृसत्तात्मक समाज से संघर्ष करते हुए सशक्तिकरण के मार्ग पर पल-पल आगे बढ़ रही है। 'बसंत सिर्फ एक तारीख' कहानी की नायिका चंदा पहले नौकरी नहीं करती थी किंतु अपने अस्तित्व की रक्षा का बोध उसे नौकरी करने के लिए प्रेरित करता है। चंदा पढ़ी लिखी थी परंतु वह घर के चहारदीवारी के अंदर ही अपने को भाग्यशाली समझ रही थी। वह कहती है "सच पूछो तो मैं महीना बाद घर से निकली थी। तब उन्होंने देखा लोग बेतहाशा भागे जा रहे हैं- साइकिलों पर, स्कूटरों पर रिक्शों पर।"[1] चंदा घर में बेकार रहते रहते यह भी भूल चुकी थी कि दस बजे का समय दफ्तर जाने का होता है। वर्षों से उनके घर से कोई दफ्तर नहीं गया था। बेरोजगारी पुश्तैनी रोजगार था फिर भी परिवारों का गुजर किसी तरह होता ही था। चंदा कहती है- "दरअसल हम लेखन को समर्पित दंपति थे। सारे दोपहर हम कलम घसीटते थे, शाम कॉफी हाउस में बीतती थी।"[2] फिर भी समाज के मान्य अर्थों में वह बेरोजगार थे। चंदा घर का खूंटा छुड़ाकर आजाद होना चाहती थी। उन्होंने अपने अस्तित्व के लिए अपने पुश्तैनी रोजगार को चुनौती देती हुई। अपने आकांक्षाओं का आकाश बदलने निकल पड़े। अंतिम प्रयास में वह कॉलेज के अध्यापिका बनी। अंततः चंदा अपनी मेहनत और मेधा शक्ति के बल पर नाम रोशन किया। शिक्षा के कारण आज उनके लिए ऑर्थोपार्जन के नए द्वार खुले।

कहानी 'जिंदगी सात घंटे बाद की' नायिका आत्मीया अपने आप में केवल सात घंटे जीती है। महनगर के बिखरे हुए परिवेश में घर पर वह जड़वत जीती है। घर और समाज के घेरेबंदी से निकलकर वह आज अपने अस्तित्व के लिए सुबह-शाम काम करती है। कब ऑफिस का समय पूरा हो जाता है, पता ही नहीं चलता- "सुबह दस बजे का उत्साह शाम पांच बजे का डिप्रेशन अपने ड्राअर लॉक करते हुए उसे लगता है। पांच बज भी गए अब से लेकर कल दस बजे का समय वह और देवनगर का उसका फ्लैट और कुछ नहीं.... "[3] आत्मीया को लगता है ऑफिस

का बेतहाशा कम भाग दौड़ उसके व्यक्तित्व के पास रोज सिर्फ सात घंटे जीने को है। दस से पांच दफ्तर से घर के अलावा उसकी जिंदगी में कुछ नहीं है। फाइलों के अलावा कहीं उसके दस्तखत का मूल्य नहीं है। अफसरी से हटकर उसका कोई सेल्फ नहीं है। वह अपने अस्तित्व एवं अस्मिता की पहचान के लिए रोज सात घंटे का वजीर बनती है और से सत्रह घंटे 'ना कुछ था' के बीच दब जाती है। मुझे लगता है कि स्त्री अपनी मेहनत और संघर्ष के दम पर अपनी अस्मिता के लिए पूरे लगन से काम करती है।

जांच अभी जारी है- कहानी की नायिका अपर्णा एक सुशिक्षित पढ़ी-लिखी मेहनती लड़की है जो अपने अस्तित्व के लिए अपनी अस्मिता को स्थापित करने के लिए जीवन और व्यवस्था से लड़ रही होती। अपर्णा एक नौकरी पेशा औरत है जिसकी नियुक्ति विश्वकर्मा डिग्री कॉलेज में हुई थी। फिर उन्होंने इस नौकरी को छोड़कर बैंक की नौकरी करने लगी क्योंकि विद्यार्थी जीवन से ही बैंक की नौकरी आकृष्ट करती थी। उसको लगता है कि "शक्ति, सच्चाई और नैतिकता जैसे मूल्यों का एहसास जितना बैंक में हो सकता है उतना किसी नौकरी में नहीं।"[4] परंतु नौकरी उतना आसान नहीं था। राज्यकृत बैंकों का यह इस्तेमाल अपर्णा के लिए धक्का था अपर्णा को एक ऐसी जंजाल में फानसी जाती है कि उनका फाइल अभी जांच भी जा रही है वह कहती है कि "मैं चीख-चीख कर बताऊंगी कि इस राष्ट्रीयकृत बैंक में कैसे घोपले और सौदेबाजी होती है।"[5] देखा जाए तो आर्थिक भ्रष्टाचार में आज समस्त सरकारी गैर सरकारी तंत्र इस तरह से डूब गया है कि बेईमानी मानवता मूल्यहीन बनती जा रही है और घोपले-घोटाले मूलाधार। अपर्णा अपने हक और अधिकार के लिए निडरता पूर्वक लड़ रही है। केस बिल्कुल झूठे हैं जांच उसके अट्ठारह सौ के बिल पर बैठाई गई थी पर अब तक उसे अठाईस हजार रुपए खर्च हो चुके होंगे। वह फाइल ढोते-ढोते बेजान होती चली जा रही थी। सारा शरीर सफेद पड़ता जा रहा था। फाइल मोटी होती जा रहे थे अपर्णा दुबली। क्या अपर्णा कभी नए सिरे से जीवन शुरू कर सकेगी। अंततः वह हार नहीं मानती है। वह अपने उपस्थिति अस्मिता का एहसास करने के लिए संघर्ष कर रही होती है।

'नई दुनिया' कहानी के नायिका पूर्वा पढ़ाई में होशियार ना होने पर परिवार से उपेक्षित है। समाज के लोग निहायत और बेवकूफ लड़की समझते हैं। वह इस उपेक्षित जीवन से तंग आकर साहित्य सृजन करने लगती है परंतु परिवार को यह पसंद नहीं। परिवार को आसपास के लोग चाहते हैं कि वह औसत लड़कियों की तरह पेंटिंग क्लास या कुकुरी क्लास ज्वाइन कर ले, पर पूर्व अपने को साहित्यकार के रूप में स्थापित करना चाहती थी। "यही समय था जब कमरे में अकेले रहते रहते कहानी, उपन्यास, सैकड़ो की संख्या में पढ़ डालें। उसने पाया किताबों में एक निराली दुनिया कैद है। इनमें तरह-तरह के लोग हैं; तरह-तरह के परिवेश।"[6] पूर्वा ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को एक नई पहचान दी। अक्सर गोष्ठियों, सम्मेलनों में पूर्वा का परिचय अन्य रचनाकारों से होता है। अब पूर्वा को बेझिझक अपनी बिरादरी में उसकी समस्त खूबियों और कमियों समेत शामिल कर लिया गया।

कहानी 'छोटे गुरु' की कथा नई का रेखा पढ़े-लिखी है। शादी एक संपन्न परिवार में शिवकुमार गुप्ता से हुई थी। जो कैनेडा के एक स्कूल सेंट माइकल में शिक्षक था। शादी के दस दिन बाद ही उसे अकेले उस परिवार के लोगों के साथ छोड़ कर चला गया। साल भर के अंदर सास-ससुर ने उसे घर से धक्के देकर बाहर कर दिया। अन्याय और अपमान के दोहरे आक्रमण से रेखा वास्तव में रेखा जैसी क्षीण और व्यक्तित्त्वहीन हो चली। रेखा एक ऐसी चेतना संपन्न नारी है, जो अपने अस्तित्व के लिए अपने को जीवित रखना चाहती है। परन्तु काम और कमाई दोनों का अभाव उनका मनोबल तोड़ रहा था।

रेखा मायूस नहीं होती है। वह इस नरकीय जीवन से बाहर आना चाहती है। वह एक स्थायी नौकरी चाहती है। जिसके सहारे शेष जीवन कट सके और इस एकाकी जीवन से बाहर निकल सके।"[7] अंततः रेखा को छोटे गुरु के द्वारा मिशन स्कूल में नौकरी मिल जाती है। अब रेखा स्कूल से चार बजे घर आ जाती है और अपना परिवार का भरण-पोषण करती है। इसी प्रकार स्त्री को अपने मानसिक स्तर पर बदलाव लाना चाहिए ताकि अकेलेपन और घुटन जैसी समस्याओं से मुक्ति मिल सके।

'मनहूसाबी' कहानी की कथा नायिका उषा एक ऐसी लड़की की कथा है जब वह कोख में थी तब से उसका अस्तित्व मिटने के लिए घर वाले अनेक प्रयत्न कर चुके थे। दादी ने कहा- "चल हो जाने दे जो बेटा हो गया तो क्या कहना, अगर बेटी हुई तो घुरे में डाल देंगे या अस्पताल में ही छोड़ आएंगे।"[8] जिस दिन उषा पैदा हुई घर में चूल्हा तक नहीं जला। कृपा पूर्वक जिंदा रहने दिया गया यही बड़ी बात थी। बड़ी होकर उषा बी. ए., एम. ए. तक की

पढ़ाई की किंतु पति का रौब सहना पड़ता है। वह सेवा भाव से घर का सारा काम करती है। जब वह थक जाती है तो पति उसे ताने देता है। घर में रहते उसका पूरा अस्तित्व खो चुका है। वह अपने जीवन की तुलना कॉकरोच से करती है।

'मनहूसाबी' को लगता है कि खुद भी कॉकरोच है। हर हालत में जीवित और गतिशील। दरअसल उन्होंने घर की चख-चख से निजात पाने के लिए और अपने को पहचान दिलाने के लिए नौकरी ढूंढ ली। एक स्कूल में पढ़ने लगी है। वह अपनी शक्ति और सहनशक्ति की आखिरी बूंद तक दांव में लगा देती है। उषा अब घर का सारा काम करते हुए तीन बच्चे को भी संभालती है और स्कूल जाकर पढ़ाती भी है। उषा को लगता है कि "वह आठ में से सात घंटे स्कूल में और दस घंटे घर में बोलते-बोलते गले की नसों में सूजन बैठ गई है।"[9] ऐसा लगता है वह एक इंसान नहीं धक्का गाड़ी है जो सुबह से ही ठेल-मेल शुरू हो जाती है। परंतु वह अपने आप को अपने अस्तित्व के लिए कड़ी मेहनत के साथ कटिबद्ध कर लेती है।

ममता कालिया के उपरोक्त कहानियों से यह स्पष्ट होता है कि नारी समाज में अपनी इच्छाओं को प्रदर्शित कर अपने अधिकारों के प्रति सजग है। नारी पात्र अपने कार्यों के प्रति लक्ष्य स्वयं निर्धारित कर अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व स्थापित करना चाहती है और उसके लिए हमेशा प्रयासरत भी रहती है।

अगर वर्तमान समय में देखा जाए तो आज के दशक में स्त्री की स्थिति काफ़ी बदली हुई सी प्रतीत होती है। आज स्त्री धरती से लेकर अंतरिक्ष तक पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। पितृसत्तात्मक समाज में अपना स्वतंत्र अस्तित्व स्थापित कर रही है सारे विश्व में आज नारी का स्थान सर्वोच्च है। वह विभिन्न क्षेत्रों में जैसे- शिक्षा, चिकित्सा, सुरक्षा, बैंकिंग, तकनीकी, मीडिया, राजनीति, अंतरिक्ष, खेल, उद्योग आदि महत्वपूर्ण क्षेत्र का बड़े बेहतर तथा योजनाबद्ध ढंग से नेतृत्व कर रही है। अगर गौर किया जाए तो नारी पुरुषों से दो कदम आगे है। वह घर का काम, बाल-बच्चों को संभाल कर दफ्तर का कार्य भी निष्ठा पूर्वक कर रही है। हम यह पूर्णतः नहीं कह सकते हैं कि नारी की स्थिति में सौ फ़ीसदी बदलाव आया है। परंतु इतना जरूर कह सकते हैं कि महिलाएं अब अपने अधिकारों के प्रति सजग है।

पहले जमाने में महिलाओं को घर से बाहर निकलने पर सख्त पाबंदी थी। वह घर के अंदर रहने पर मजबूर थी। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य यही था कि उन्हें अपने पति व बच्चों का ख्याल रखना है। देखा जाए तो नारी की दशा प्राचीन काल में देवी का दर्जा देने के बाद भी उनकी हालत किसी राजा महाराजा की दासी के समान थी। वैसे ही मध्यकालीन भारत में महिलाओं की स्थिति आर्थिक, सामाजिक और व्यावहारिक रूप से बहुत खराब थी। स्त्रियों की दशा उस समय व्यावहारिक दृष्टि से देखा जाए तो वह मात्र एक औपचारिकता से ज्यादा कुछ नहीं था। स्त्रियों को सामाजिक स्तर पर काम करने की मनाही थी। किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले उनकी राय लेना जरूरी नहीं माना जाता था। शादी के पहले लड़कियों को मां-बाप के दबाव में जीना पड़ता था। वही शादी के बाद उन्हें अपने पति की इच्छा के अनुसार चलना पड़ता था। मुगल काल के दौरान तो हालात और भी खराब थी महिलाओं को सती प्रथा और परदे में रहने जैसे बंधनों में बंद कर रहना पड़ता था। मुगल काल के बाद ब्रिटिश राज में भी हालत नहीं सुधरे बल्कि उसके बाद तो व्यवस्था और भी बिगड़ गई थी। उसके बाद महात्मा गांधी ने बीड़ा उठाया और महिलाओं से आहवान किया कि आजादी के आंदोलन में हिस्सा लें। इसके बाद सरोजिनी नायडू, विजयलक्ष्मी पंडित और अरुणा आसफ अली जैसी महान नारियों का उदय हुआ, जिन्होंने खुद महिलाओं की दशा सुधारने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके बाद इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्री बनने के साथ ही व्यापक स्तर पर महिलाओं के विकास पर जोर दिया जाने लगा। इंदिरा गांधी खुद अपने आप में ही महिलाओं के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा के स्रोत थी। उन्हीं की राह पर चलते हुए अनेक महिलाएं समाज में गौरवपूर्ण पड़ाव तक पहुंची। आज नारी अपनी मानवीय भावना और मानसिक क्षमता के आधार पर पुरुष के समक्ष है। परंतु फिर भी अपनी अस्तित्व एवं अस्मिता के लिए संघर्ष करना पड़ता है। अपने इसी संघर्ष के परिणाम स्वरुप काफी हद तक नारी ने रूढ़ियों एवं वर्जनाओं से मुक्ति पाई है। आज नारी अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के बराबर बंटवारे की मांग कर रही है। नारी की इसी स्वाभाविक चेतना ने उनके पारंपरिक क्षति को खंडित कर दिया है। आज नारी की चेतन स्तर उसकी लिखने से प्रवाहित हो रहा है।

निष्कर्ष:- ममता कालिया ने शोषण वह पीड़ित नारी की समस्याओं का सही मूल्यांकन करके उनकी स्वतंत्रता के लिए परंपराओं और बंधनों से मुक्ति की दिशा को अभिप्रेरित तथा निर्देशित करती है। लेखिका उन पारंपरिक मूल्यों व रूढ़ियों को बनाए रखना नहीं चाहती है जो नारी के जीवन को दयनीय बना देती है। क्योंकि अनावश्यक परंपराओं में बंधकर नारी के व्यक्तित्व का विकास रुक जाता है। समाज में नारी का अस्तित्व बहुत महत्वपूर्ण है। नारी की प्रतिभा को नजर अंदाज करके समाज की कल्पना व्यर्थ है। क्योंकि नारी ही संपन्न परिवार बनाती है, परिवार से घर बनता है, घर से समाज का निर्माण होता है और समाज से देश बनता है। अब महिलाओं के लिए समुचित विकास एवं सशक्तिकरण का वातावरण बनता जा रहा है। नारी पुरुषों के समक्ष कदम से कदम मिलाकर अपनी उपस्थिति व अस्मिता का एहसास करा रही है। अब वह अपने अधिकारों के प्रति जागरुक है।

ममता कालिया ने नारी मन को उसकी आकांक्षाओं, अस्मिता से जुड़े प्रश्नों, संघर्षों, घुटन, अकेलापन जैसी समस्याओं को प्रस्तुत किया है। उन्होंने नारी को घर की चहारदीवारी से निकालकर संघर्षशील बना दिया है। नारी स्वावलंबन के लिए उच्च नौकरी भी करती है। परिणामस्वरुप नारी का जीवन सशक्त एवं संघर्षशील बन गया है। सभी नारी आत्मनिर्भर बन चुकी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ -

1. कालिया, ममता- बसंत सिर्फ एक तारीख, प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पेपरबैक्स, तीसरा संस्करण-2021, पृष्ठ संख्या-117

2. वही, पृष्ठ -118

3. कालिया, ममता- 'जिंदगी सात घंटे बाद की' कहानी संग्रह 'छुटकारा' लोकभारती प्रकाशन, दूसरा संस्करण 2016,, पृष्ठ संख्या- 59

4. कालिया, ममता- 'जांच अभी जा रही है', लोक भारती प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण-2016, पृष्ठ संख्या-27

5. वही, पृष्ठ संख्या - 42

6. कालिया ममता नहीं दुनिया कहानी संग्रह उसका यौवन लोक भारतीय प्रशासन दूसरा संस्करण 2016 पृष्ठ 18

7. कालिया, ममता- छोटे गुरु कहानी संग्रह 'काके द हट्टी' आवृत्ति प्रकाशन, दूसरा संस्करण- 2015, पृष्ठ -147

8. कालिया, ममता- 'मनहुसानी' कहानी संग्रह 'उसका यौवन', लोक भारती प्रकाशन, दूसरा संस्करण -2016, पृष्ठ-58

9. वही, पृष्ठ - 61